डॉ. पांडुरंग पाटील
(एम्.ए., पीएच्.डी.)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर -४१६००४।

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का अनुशीलन'** यह लघु शोध-प्रबंध परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर ।
तिथि : २९ दिसंबर, २००४

(डॉ. पांडुरंग पाटील)
Professor & Head,
Department of Hindi
Shivaji University, Kolhapur.

डॉ. मोहन पुंडलिक जाधव
(एम्.ए. (हिंदी), एम्.ए. (मराठी), बी.एड्., पीएच्.डी.)
हिंदी विभागप्रमुख,
कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय,
पंढरपुर।

- प्रमाणपत्र -

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री. नवनाथ नामदेव पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध **'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का अनुशीलन'** मेरे मार्गदर्शन में पूरा किया हैं। यह उनकी मौलिक रचना हैं, जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य के बारें में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान - पंढरपुर
तिथि - 24 दिसम्बर, 2008

शोध-निर्देशक

मो. पुं. जाधव

(डॉ. मोहन जाधव)

-प्रख्यापन-

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी सर्वथा मौलिक रचना हैं, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही हैं। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई हैं।

स्थान- कोल्हापुर।

तिथि -30 दिसंबर, 08

शोध-छात्र

(श्री. नवनाथ नामदेव पाटील)

प्राक्कथन

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आधुनिक हिंदी साहित्य जगत् के एक सफल एवं अद्वितीय साहित्यकार थे। उन्होंने अपनी प्रतिभाशक्ति द्वारा साहित्य की हर विधा में अपने व्यक्तित्व की अमीट छाप छोड़ी हैं। वे मूलत: 'तीसरे सप्तक 'के प्रमुख कवि थे। इसलिए उनका कवि रूप ही अधिक उभरकर सामने आया हैं। जिसके कारण उनका अन्य साहित्य अनदेखा रहा हैं। कविता के अलावा उनका उपन्यास, कहानी, नाटक आदि विधाओं में भी महत्वपुर्ण योगदान रहा हैं।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में राजनीति और व्यवस्था पर भरपूर व्यंग हैं। सक्सेना ने स्वतंत्र भारत में विशेषत: आपादकाल के बाद निर्माण हूई परिस्थिति का चित्रण करना उचित समझा। यही कारण हैं कि उनके नाटकों में व्यंग्य अधिक हैं।

विषय –चयन–

एम. फिल. में प्रवेश लेने के पश्चात् मुझे ज्ञात हुआ कि कोई भी एक साहित्य विधा चुनकर उसपर शोध–प्रबंध लिखना हैं। तब मैंने अध्ययन के लिए रखे जयशंकर प्रसाद, धर्मवीर भारती, सुरेंद्र वर्मा, मृणाल पांण्डे और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि के नाटक पढ़ ड़ाले। उसमें सक्सेना का 'बकरी' नाटक भी था। 'बकरी' के तीन सौ से भी ज्यादा प्रयोग होने के कारण उससे प्रभावित होकर सक्सेना के अन्य नाटक पढने के लिए मैं प्रेरित हुआ। तब मैंने सक्सेना के 'लड़ाई' और 'अब गरीबी हटाओ' ये नाटक भी पढ़े। तत्पश्चात् इन नाटकों का अनुशीलन करने की जिज्ञासा मेरे मन में उत्पन्न हुई। इस दृष्टिसे मैंने मार्गदर्शक और विभाग अध्यक्ष महोदय से संपर्क किया। उनसे विचार विमर्श करने पर ज्ञात हुआ कि आज तक सक्सेना के नाटकों को लेकर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य नहीं किया हैं। तब मैंनें **'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का अनुशीलन'** यह विषय चुनकर उसपर शोधकार्य करने का संकल्प किया। विवेच्य नाटकों के पठन के पश्चात् अनुशीलन के पूर्व विवेच्य कृतियों को लेकर मेरे मन में निम्न प्रश्न उपस्थित हुए–

(१) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जीवन किस तरह बीता? उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ कौनसी हैं?
(२) सक्सेना के नाटकों का कथ्य क्या हैं?
(३) शिल्प की दृष्टि से सक्सेना के नाटक कैसे हैं?

४) सक्सेना के नाटकों के उद्देश्य क्या हैं?

५) सक्सेना के नाट्य कृतियों में चित्रित समस्याएँ कौनसी हैं? क्या उनका समाधान उसमें मिलता हैं?

अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया हैं-

प्रथम अध्याय - ''सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

किसी भी साहित्य कृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के व्यक्तित्व का अध्ययन आवश्यक हो जाता हैं। इस अध्याय में मैंने सक्सेना के जीवन परिचय के अंतर्गत- जन्म, माता-पिता, बचपन,शिक्षा, पारिवारिक जीवन, नौकरी, पुरस्कार और निधन आदि का विवेचन किया हैं। तथा इसी अध्याय के अंतर्गत उनके बहिर्गत तथा आंतरिक व्यक्तित्व के साथ उनके साहित्यिक कृतित्व का परिचय दिया हैं। अंत में निष्कर्ष दिया हैं।

द्वितीय अध्याय - ''सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के साहित्य का संक्षिप्त परिचय ''

इस अध्याय में सक्सेना के संपूर्ण साहित्य पर दृष्टि डालते हुए उनका संक्षिप्त परिचय दिया हैं। उसमें उनके काव्य संग्रह, नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी-संग्रह आदि का समावेश हैं। अंत में सक्सेना का हिंदी नाट्य साहित्य में योगदान कैसा रहा हैं? इसका विवेचन करके निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं।

तृतीय अध्याय - '' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का कथ्य ''

इस अध्याय में सक्सेना के 'बकरी', 'लड़ाई' और 'अब गरीबी हटाओ' इन तीनों नाटकों का कथ्य का क्रमश: विवेचन किया हैं। इसके अंतर्गत सामाजिक तथा राजनीतिक व्यंग व्यक्त करना, स्वार्थी राजनेताओं से सावधान रहना, शोषण तथा काले धंधे को उजागर करना, छिछली राजनीति का पर्दाफाश करना, व्यवस्था पर प्रहार करना, भ्रष्टाचार को रोकना, समाज में व्याप्त दुराचार का विरोध करना, लोकतंत्र की मानसिकता और राजतंत्र की वृत्ति पर प्रकाश डालना और गरीबी हटाने के लिए गरीबों को प्रेरित करना आदि कथ्यों पर प्रकाश डाला हैं। तथा अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं।

चतुर्थ अध्याय – '' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का शिल्प''

किसी भी साहित्य कृति के मौलिक तथ्यों के अन्वेषण हेतु संबंधित साहित्य कृति को 'तत्वों' के आधार पर परखना आवश्यक होता हैं। इस दृष्टि से अनुसंधान की दृष्टि से मद्देनजर इस अध्याय में शिल्प का अर्थ और परिभाषाएँ देते हुए क्रमश: 'बकरी' , 'लड़ाई' और ' अब गरीबी हटाओ' का कथावस्तु, पात्र या चरित्र–चित्रण, कथोपकथन (संवाद), देशकाल वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश्य, अभिनेयता, रंगमंच निर्देश, दृश्य–विधान और गीत –योजना आदि तत्वों के आधारपर विवेचन एवं विश्लेषण के कारण मुझे सक्सेना जी के विवेच्य नाटकों में स्थित विचार, मानसिक एवं सृजनात्मक भूमिका को जानने में सहायता मिली हैं। अंत में अध्याय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं।

पाँचवाँ अध्याय – '' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में चित्रित समस्याएँ ''

प्रस्तुत अध्याय में समस्या, अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, व्याप्ति, प्रकार के साथ–साथ सक्सेना द्वारा अपने नाटकों में जिन समसामायिक समस्याओं का चित्रण हुआ हैं, उसका विवेचन किया हैं। उसमें राजनीतिक, भ्रष्टाचार, आर्थिक,बेसहारा लोगों की समस्या, बेकारी, भाषा, धार्मिक, गरीबी तथा दरिद्रता, अंधविश्वास, जाति, अन्याय–अत्याचार, शोषण, प्रशासनिक अव्यवस्था, अज्ञान, मिलावट, अखबार,यातायात आदि समस्या के विवेचन के साथ उसके समाधान पर भी चर्चा की हैं। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

उपसंहार –

उपसंहार के अंतर्गत विवेच्य सभी अध्यायों के निष्कर्ष एवं प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया हैं।

अनुसंधान की नयी दिशाएँ –

इसके अंतर्गत सक्सेना के नाट्य साहित्य पर स्वतंत्र रूप से जिन विषयों पर अनुसंधान कार्य किया जा सकता हैं, ऐसे विषयों की सूची दी हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

इसके अंतर्गत प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध के लेखन कार्य में सहायक आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश तथा पत्र–पत्रिकाओं की सूची दी गयी हैं।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में जिनसे मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ, जिन्होंने मुझे हमेशा प्रेरणा दी, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

सर्वप्रथम जिनकी रचनाओं का प्रयोग मैंने संदर्भ ग्रंथ के रूप में किया हैं, उन समस्त लेखकों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। साथ ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में मुझे मार्गदर्शन करनेवाले श्रध्देय गुरूवर्य डॉ. मोहन जाधव जी और आपके परिवारजनों के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही आदरनीय गुरूवर्य हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ. पांडुरंग पाटील जी, डॉ. वसंत मोरे जी, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, डॉ. के.पी. शहा जी, (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर), डॉ. आर.डी. कदम जी, डॉ. संजय नवले जी, प्रा. दिव्यवीर मॅडम (बार्शी) आपकी कृपा दृष्टि हमेशा मुझे दिशा देती रही। उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

आवश्यक सामग्री जुटाने में सहायता करने में डॉ. कल्पना अग्रवाल मॅडम (भुसावल), डॉ. गिरीश काशिद, डॉ. साताप्पा चव्हाण जी का भी सहयोग महत्वपूर्ण रहा। अत: मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही जिनकी प्रेरणा और शुभाशिर्वाद के फलस्वरूप मैं यह शोध कार्य कर सका वे हैं मेरे पिताजी श्री. नामदेव रंगराव पाटील और माताजी सौ. बायडाबाई। उनका ऋण चुकाने के लिए यह जीवन अधुरा हैं। भाई नागनाथ और बहन सौ. अनुराधा की शुभकामनाएँ हमेशा मेरे साथ रही। उनका भी मैं ऋणी हूँ।

हमेशा मेरे शुभचिंतक रहे मेरे मित्र ॲड. विकास जाधव, प्रा. भारत भाकरे, सुहास गोंदील, सचिन काळे, सचिन मते, दत्ता सुतार, संभाजी घोरपडे, विशाल बुडूख, विकास कुटे(बार्शी), सचिन पवार ,संजय ओमासे,दयानंद पाटील(कोल्हापुर), योगेश पाटील(जलगांव), आदि के साथ शिवराज शिंदे सह एम. फिल. के सभी सहपाठियों का मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का टंकन करनेवाले व्यंकटेश ग्राफिक्स, पंढरपुर का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही ग्रंथपाल, बॅ.बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर, कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपुर, शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी, झाडबुके महाविद्यालय, बार्शी आदि का भी मैं आभारी हूँ।

अंत मे स्थानाभाव के कारण जिनका नामोल्लेख न कर सका हूँ ,उन सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोगी एवं शुभचिंतकों का मैं ऋणी हूँ।

शोध-छात्र